इसलिए

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
ज़िन्दगी आंसुओं में नहायी न हो
शाम सहमी न हो, रात हो न डरी
भोर की आँख फिर डबडबाई न हो
इसलिए...

सूर्य पर बादलों का न पेहरा रहे
रौशनी रोशनाई में डूबी न हो.
यूँ न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो
आसमान में टंगी हो न खुशहालियां
कैद महलों में सबकी कमाई न हो
इसलिए...

कोई अपनी खुशी के लिए गैर की
रोटियाँ छीन ले हम नहीं चाहते
छिनकर थोड़ा चारा कोई उम्र की
हर खुशी बीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा
और किसी के लिए एक चटाई न हो
इसलिए...

अब तमन्नायें फिर न करें ख़ुदकुशी
ख्वाब पर खौफ की चौकासी न रहे
श्रम के पावों में हो न पड़ी बेडियाँ
शक्ति की पीठ अब ज़्यादती न सहे
दम न तोड़े कही भूख से बचपना
रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो
इसलिए...

- वशिष्ठ अनूप